

आसो सुष्ट ९, बुधवार ता. १४-१०-१९६४
श्री तारणस्वामी द्वारा रचित श्रावकाचार, गाथा-४३,
४५, ४९, ५०, प्रपचन-१८

ये अेक तारणस्वामी रचित श्रावकाचार है. उसमें श्रावकका आचार क्या है? श्रावकका आचरण कैसा होता है, उसकी बात चलती है. समझमें आया? देओ, श्रावक किसको कलते हैं? संप्रदायका नहीं. वास्तविक वस्तुका स्वभाव सर्वज्ञ भगवान त्रिलोकनाथ ङिनागममें वर्णन करते हैं, अैसा वस्तुका स्वरूप परमात्मा है, अैसा अंतर अनुभव करे उसको श्रावकका आचार कलनेमें आता है. बाहरकी क्रिया आदि लो, रागकी मंदता आदि लो, वल कोर श्रावकाचार नहीं है.

मुमुक्षु :- व्यवहार आचार.

उत्तर :- व्यवहार है उसको कोर परमार्थ नहीं है. यलं परमार्थकी बात चलती है. देओ!

कर्म अष्ट विनिर्मुक्तं, मुक्ति स्थानेषु तिष्ठते।

सो अहं देह मध्येषु, यो जानाति स पंडिता॥४३॥

मुमुक्षु :- अलुत स्पष्ट है.

उत्तर :- लं, स्पष्ट है.

‘कर्म अष्ट विनिर्मुक्तं’. आठ कर्म है, आठ कर्म ७५ मिट्टी. उसमें प्रकृति (लुती है). ज्ञानावरणुकी पांय, दर्शनावरणुकी नु अैसी अलुत प्रकृतियां हैं. अेक-अेक प्रकृतिमें अनंत-अनंत परमाणुका पिंड है. अैसे आठ कर्म है, उसका यलं पलवे थे, अैसी प्रतीति करवार है. पलवेसे आत्मा सिद्ध समान ली पर्यायमें था, अैसा नहीं है. समझमें आया? पलवेसे अनादिसे आत्मा आठ कर्मके संबंध बिनाका था, अैसा नहीं. अनादिसे प्रत्येक आत्मा.. अनंत आत्मा हैं, तु आठ कर्मका निमित्त-नैमित्तिक उसको संबंध है.

कर्मसे संसार नहीं, विकार नहीं, विकारसे कर्म नहीं. परंतु अपनी चीज कर्म कर्ममें है और विकार विकारकी पर्यायमें है. अैसा अनादिका निमित्त-नैमित्तिक संबंध है. अैसा स्वीकार किये बिना आठ कर्मका नाश और सिद्धपदकी प्राप्ति लुती नहीं. ‘कर्म अष्ट विनिर्मुक्तं’ आठों कर्मसे रहित. पलवे सहित था. देओ! यलं श्रावकाचारकी बात चलती है. नहीं तु गृहस्थाश्रममें तु अडा राज-पाट लुता है, सब लुता है. लो, वल कलं श्रावकपना है, उसमें कलं श्रावकपना रुक गया है.

श्रावकका आचार तो उसको कहते हैं कि अपना आत्मा, जैसे सिद्ध भगवान अष्ट कर्मसे विनिर्मुक्त हैं और 'मुक्ति स्थानेषु तिष्ठते' सिद्धक्षेत्रमें बिराजमान हैं. है न? तो उतना सिद्ध किया कि सिद्धक्षेत्र है. वहां मुक्तिमें परमात्मा अपने स्वरूपमें बिराजमान है. कोई कहे कि सब आत्मा एक ही है और मुक्ति यहीं हो जायेगी ऐसी बात है नहीं. 'मुक्ति स्थानेषु तिष्ठते'. ऐसा सिद्ध करनेसे क्षेत्र सिद्ध किया. पंडितजी! एक तो आठ कर्मका संबंध था, अब तोड़कर अपने स्वभावकी पर्यायकी प्राप्ति कर, 'मुक्ति स्थानेषु तिष्ठते' उर्ध्व लोकमें तिष्ठ-बिराजमान है. उसके सिवा दूसरा कहे कि सर्वव्यापक हो जाये, ऐसा हो जाये, वह आत्माका या सिद्धका या द्रव्यका कोई स्वरूपने उसने जाना नहीं.

'सो अहं देह मध्येषु'. दो पंक्तिमें सिद्धकी बात कही. ऐसा ही 'अहं देह मध्येषु'. वह भी आकाशमें है. यहां भी आकाशमें है. समझमें आया? सब साथमें अनंत परमाणु पुद्गल मध्यमें है. यहां भी आत्मा शरीर, कर्मके मध्यमें है. लेकिन है उससे भिन्न. समझमें आया?

मुमुक्षु :- कबकी बात है?

उत्तर :- वर्तमान बात है. ऽलखंडज!

सम्यग्दृष्टि अपने आत्माको वर्तमानमें 'सो अहं देह मध्येषु' सर्वव्यापक आत्मा नहीं है, वह भी सिद्ध किया. 'देह मध्येषु' देहमें अंदर है. अनंत देह सबका भिन्न-भिन्न है. कार्माणु, तैजस, औदारिक आदि असंख्य शरीर है. मेरा यह देह है, ऐसा कलनेमें आता है, तो देह है. कार्माणु शरीर अंदर है, औदारिक शरीर है, तैजस शरीर है, सब है. ऐसी अस्ति प्रतीत करके मैं देहके अंदर अहं सिद्ध समान मेरी चीज है. आकाशमें, जैसे उस आकाशमें भगवान वहां बिराजते हैं, इस आकाशमें मेरा परमात्मा मेरे स्वभावमें है. मैं तो बिलकूल शुद्ध, राग-द्वेषके सिवाय और भेद बिनाकी अभेद चीज, ऐसा मैं आत्मा हूं, ऐसा जिसको सम्यग्दर्शन हो उसका नाम श्रावकाचार कहनेमें आता है. ऽलखंडज! ये भाव किया की, ऐसा किया, इलाना किया, दया पावी, प्रत किया वह श्रावकाचार है ही नहीं.

भगवान आत्मा अपना निज स्वरूप, सिद्धपद स्वरूप ही अपना स्वरूप है. अपने स्वभावमें और सिद्धमें, उनकी पर्याय प्रगट है, यहां प्रगट नहीं है, परंतु स्वभाव तो मेरा ऐसा ही पूर्ण है. वर्तमानमें मेरी विद्यमान शक्तिमें मैं पूरा पूर्ण आठ कर्मसे रहित, भविनतासे रहित, पूर्ण शुद्ध मैं देहमें बिराजमान ऐसा जो जानन ... 'यो जानाति' जैसे जो अनुभवता है. 'जानाति'का अर्थ ये है. समझे? 'यो जानाति' ऐसा मेरा आत्मा पर आत्मासे भिन्न, आठ कर्मसे भिन्न (है). ये बात उसने वारंवार बहुत वी है. कोई उसकी किंमत निकाव देते हैं. एक ही बात बारंवार की है. लेकिन वह तो अध्यात्मकी भावनामें

बारंबार वह बात आती है. समझमें आया? आये. कहते हैं न, कितने ही पंडित लोग कहते हैं. बारंबार एक ही बात करते हैं, बारंबार एक ही (बात करते हैं). लेकिन ओकी पर्याय, अनादिकालसे वही पर्याय प्रगट, प्रगट, प्रगट करती हुई चली आयी है. सिद्धमें भी एक समयमें पर्याय अनंत.. अनंत.. अनंत.. वैसी ही चली आती है, तो उसमें पुनरुक्ति है? समझमें आया? पंडितजी! श्रावकाचार आदि सबमें एक ही बात अनेक बार की है. लेकिन अध्यात्म संबंधी साधारण बातमें विस्तार नहीं आता. विस्तार तो ... अंदरमें गहराईमें स्वाध्याय करनेसे आता है. यहां तो साधारण अध्यात्मकी भावना है. उसमें गहराईकी बात सामान्य क्या है, विशेष क्या है, अनंत गुण क्या है, उसकी शक्तिकी पर्याय कितनी है, उस पर्यायका अविभाग प्रतिच्छेद कितना है, वह बात उसमें नहीं आती. समझमें आया? वह तो यहां टूंकणमें... टूंकणमें क्या कहते हैं? संक्षेपमें (करते हैं).

‘यो जानाति स पंडिता’. दूसरा कोई ज्ञान नहीं हो, शास्त्रका भी ज्ञान नहीं हो. समझमें आया? दूसरा कोई नहीं हो, लेकिन ये मेरा आत्मा अंतरमें, जैसे मुंगइलीमें मुंगी पडी है, मुंगइली आदि, मुंगइली.. जैसे आत्मा शरीरकी इलीमें और पुण्य-पापके छिलकेमें, पुण्य-पापके छिलकेमें, पुण्य-पापका विकल्प दया, दान, ब्रह्मचर्य आदि पालनेका विकल्प आदि सब छिलका है. उस छिलकेके मध्यमें मैं ही आत्मा पूर्ण शुद्ध सिद्ध समान हूं, ऐसा ज्ञानता है. ज्ञानताका अर्थ अनुभव करता है. ज्ञानताका अर्थ वह है. समझमें आया? ऐसा पहिचानता है. पहिचानताका अर्थ अपनी ज्ञानपर्यायसे पूर्णानंदमें ओकाकारतासे अनुभव आनंदका करते हैं, वही आत्मा पंडित कहनेमें आता है. कहां, समझमें आया? बाकी सब (थोथा है). यहां तो भाईने थोडा अर्थ किया है, जड है, मूर्ज है. ऐसा अर्थ किया है, हां! देओ! .. योगसारका .. जड कहां है. देओ! योगसारकी गाथा है न? जो कोई आत्माको नहीं पहिचानता है, वह शास्त्रको पढते हुआ भी जड है. ... योगसारमें. शास्त्र पढते हुआ भी... शास्त्र हां, दूसरा पढना तो कहीं दूर रह गया, अज्ञान है. लेकिन शास्त्र वीतराग सर्वज्ञ परमात्माका कहां हुआ, पढते हुआ भी जड जैसा (है).

आत्मा आनंदमूर्ति रागसे, पुण्यसे, विकारसे, व्यवहारसे भिन्न और देहसे तो भिन्न है ही. अपना अंदर आकाशमें अपना सिद्ध स्वइपी अपनेमें पूर्ण है. ऐसा अंतरमें अनुभव नहीं करता, उस शास्त्रके पढनेवालेको भी जड कहनेमें आया है. पंडितजी! ये तारुणस्वामी कहते हैं कि ये अनुभव करे वह पंडित है, बाकी मूर्ज है. नथुलावज्ज! समझमें आया कि नहीं? ये गृहस्थाश्रमकी बात चलती है, हां! गृहस्थाश्रममें रहनेपर भी, लज्जों रानियोंके संगमें रहने पर भी, अरबोंके व्यापारमें रहते हैं ऐसा टिप्पने पर भी जो कोई अंदर आत्मामें ज्ञानानंद सिद्ध समान मेरा स्वइप है, मैं ही सिद्ध हूं, ऐसा ज्ञानता है-अनुभवता है-उसको यहां पंडित, ज्ञानी, तत्त्वज्ञानी, विधिज्ञान, समजू उसको कहनेमें आता है. संसारके

उदापणको ठिडा दिया. क्या करते हैं? उदापण करते हैं? यतुराई. संसारकी यतुराईको ठिडा दी. शास्त्रकी यतुराई भी काम नहीं करे. शास्त्र तो भिन्न है. शास्त्र कुछ जानता नहीं कि आत्मा क्या है. समझमें आया? समयसारमें आयेगा, ... शास्त्र क्या जाने कि आत्मा क्या है. उसको कहां मावूम है. ये तो पत्रे, पुस्तक पुद्गलकी पर्याय है. समझमें आया? शास्त्रमें कदा हुआ भाव कि मेरा आत्मा सिद्ध समान है, औसा अनुभव दृष्टिमें लेकर साथमें वेदन करता है, वही पंडित और ज्ञानी करनेमें आता है.

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- ये पांचवा गुणस्थान और चौथे गुणस्थानमें लागू पड़ता है. चौथा गुणस्थान और पंचम गुणस्थानको यह लागू पड़ता है. लागू पड़ता है, करते हैं न? लागू पड़ता है. उसमें क्या है? गुजरातीमें लागू पड़ता है, औसा करते हैं. अनु रूप होते हैं. चौथे, पांचवे गुणस्थानको यह अनु रूप है. उसकी बात चलती है यहां. छठे मुनिकी बात यहां नहीं है. उसकी दशा तो दूसरी है.

यहां तो अपना आत्मा 'सिद्ध समान सदा पद मेरो'. 'चेतन रूप अनूप अमूर्त, सिद्ध समान सदा पद मेरो.' हो, शरीर हो, वाणी हो, कर्म हो, सब हो. मेरी चीजमें यह नहीं, औसा विकल्प रहित अंतर दृष्टिका अनुभव हो, उसका नाम ज्ञानी शास्त्रकार पंडित करते हैं. कहां, समझमें आया? उसमें तो उतने ओल लिये कि पहले आठ कर्म थे. अभी भी है, फिर भी मेरी चीजमें नहीं है. मेरी पर्याय अल्पज्ञ और विकार है, फिर भी मेरी चीजमें अल्पज्ञ और विकार नहीं है, और पर्यायमें निर्विकारमें पूर्णानंदकी पर्याय में सिद्ध समान हूं, औसा अनुभव करके पर्यायमें आनंदकी पर्याय प्रगट होती है. तो तीनों ओल आ गये. द्रव्य-वस्तु, गुण-शक्ति, उसमें .. औसी अंतर दृष्टि करनेसे पर्यायमें-अवस्थामें-हालतमें-आनंदका अनुभव हो, उसका नाम पर्याय-हालत करते हैं. उसको पंडित करते हैं. समझमें आया? ४४.

परमानंद सं दृष्टा, मुक्ति स्थानेषु तिष्ठते।

सो अहं देह मध्येषु, सर्वज्ञं सास्वतं ध्रुवा॥४४॥

पहले औसा लिया था, आठ कर्मसे विनिर्मुक्त लिया था. और मुक्तिस्थाने तिष्ठते औसा लिया था. अब कर्म नहीं लेते हुआ, 'परमानंद सा दृष्टा' औसा लिया है.

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- बस, उस दशाकी बात ली है. समझमें आया? क्या करते हैं?

ओहो..! 'परमानंद सं दृष्टा'. परमानंदका अनुभव करनेवाले सिद्ध भगवान. 'सं दृष्टा' यानी अनुभव करनेवाले. पहलेमें लिया था कि आठ कर्म रहित सिद्ध भगवान मुक्ति स्थानमें तिष्ठते हैं औसे लिया था. अब, अष्ट कर्मका अभाव होकर जो पर्याय उत्पन्न हुई, उसको

यहां ली है. 'परमानंद सं दृष्टा'. जो सिद्ध परमात्मा अपना अतीन्द्रिय आनंदका अनुभव, 'सं दृष्टा' नाम देभते हैं नाम अनुभव करते हैं. देभते हैं नाम अनुभव करते हैं परमानंदका.

'मुक्ति स्थानेषु तिष्ठते' मुक्तिस्थानमें उर्ध्वलोकमें बिराजमान, जैसे अनंत सिद्ध बिराजमान हैं. अक नई, अनंत सिद्ध बिराजमान (हैं). अशरीरी लोकाग्रे शिखर पर, पीछे अलोक भावी है, लोके अग्र (स्थानमें बिराजमान हैं). यौदह ब्रह्मांड है, उसमें अग्रमें अनंत सिद्ध बिराजमान (हैं). परमानंदका अनुभव करनेवाले जो वहां बिराजमान हैं, 'सो अहं देह मध्येषु'. वही परमानंदका अनुभव करनेवाला मैं ही आत्मा हूं. मैं शरीरका अनुभव करनेवाला नहीं, राग-द्वेषका अनुभव करनेवाला नहीं. समझमें आया? ये श्रावककी बात चलती है. ऐसा श्रावकपना? व्यवहार कइते हैं. नाम क्या है? श्रावकाचार नाम है. ये आचार है, दूसरा आचार क्या है? भक्ति, पूजा, स्मरण आदि सब तो शुभराग है. वह वास्तविक श्रावकाचार है नहीं. वह व्यवहार आचार पुण्यबंधका कारण है. वह भरा आचार है नहीं. ऽलखंढञ्च!

परमानंदका अनुभव करनेवाला, भगवान् मुक्तिस्थानमें मोक्ष क्षेत्रमें बिराजमान है. उपर है. वह भी सिद्ध किया. परमानंदका अनुभव करते-करते बिराजते कहां है? उपर क्षेत्रमें है. सर्वव्यापक हो जाये (ऐसा नहीं है). कइते हैं न? अनंतमें अनंत मिल जाये. मोक्ष होनेके बाद भिन्न कहां रहना? वहां भी चौका भिन्न? सिद्धमें भी प्रत्येक आत्माकी सत्ता भिन्न? भिन्न है. पंडितञ्च! सिद्ध भी प्रत्येक आत्मा भिन्न हैं. लोकोको जैन सर्वज्ञ परमात्मा क्या कइते हैं, भबर नहीं है आगमकी और तत्त्वकी, ... लगा दे. परमात्मा तो अकमें अनंत मिल जाये. सिद्ध होनेके बाद भिन्न कहां है? ऽलखंढञ्च!

सिद्ध है कि नहीं? सिद्ध अनंत हुआ है या नहीं? छ मदिने और आठ समयमें ६०८ मुक्तिमें जाते हैं. वहां अक हो जाये. ज्योतिमें ज्योति मिल गई. ऐसा है कि नहीं? ... ऐसा नहीं है, कइते हैं. अज्ञानी कइते हैं. मूढ तत्त्वके अनभिज्ञ कइते हैं कि सिद्धमें ज्योतिमें ज्योति मिल गई. फिर अलग कहां रहे? क्या सत्ता वहां संसारमें भिन्न थी? संसारका नाश हुआ कि सत्ताका नाश हुआ? मुक्तिमें अकमें दूसरा मिल जाये तो अपनी सत्ताका नाश हुआ. मुक्तिका अर्थ तो संसारका नाश होना. विकारी पर्यायिका नाश होना, निर्विकारी परमानंदका उत्पन्न होना. ईसलिये वह शब्द लिया है, 'परमानंद सं दृष्टा'. पंडितञ्च! तुम भी बराबर समझे बिना ऐसी ही चले हो. बराबर है कि नहीं? झूसद नहीं मिलती, धंधा-पानी.. क्या कइते हैं, (समझनेकी झूसद नहीं). ओलंभा है, पंडितञ्च! उसका कैसा अर्थ करना और.. सामनेवाला कहे, सिद्धमें .. हां. सब अक ही हो जाते हैं, बराबर है. वहां भिन्न रहे तो राग हो जाये. अहंपना जुदा रहे तो राग हो जाये. अरे..! सुन तो सली.

देभो! 'अहं' शब्द तो आया वहां. राग नहीं है. 'अहं देह मध्येषु', 'अहं देह

मध्येषु'. अरे..! दूसरेसे भिन्न करके अहं करना तो अभिमान है. ऐसा नहीं है, सुन तो सही, तुझे भावूम नहीं. समझमें आया? इसलिये शब्द रखा है. 'अहं' में मेरा आत्मा 'अहं' अनंत आत्मासे भिन्न, अनंत परमाणुसे भिन्न. जैसे सिद्ध भगवान बिराजते हैं .. के स्थानमें, अहं-अहं सत्ता अपनी भिन्न, अनंत सत्ता सिद्ध रहते हैं. ऐसा 'अहं'. देओ! दोनोंमें 'अहं' शब्द पडा है न? कोई ऐसी प्रज्ञापाशा करते हैं कि अहं करनेसे तो उसमें अभिमान आ जाता है. इसलिये सब अहं ... पंडितजी! विश्वमैत्रीका अर्थ क्या? उसे भी भान नहीं और सुननेवालेको भान नहीं. बराबर है. अहं हो जाओ, अहं हो जाओ. अहं बिना निर्विकल्पता नहीं होती. .. होता है, अभिमान होता है. अपनी ... स्वतंत्र माननेमें अभिमान होता है. यहां तो तारणस्वामी कहते हैं, 'अहं मध्येषु' अनुभव करनेसे आनंद होता है. सेठ! डालचंदजी! समझमें आया? अहं में भिन्न हूं. कर्मसे, शरीरसे, विकारसे, अनंत आत्मासे मेरी यीज अंदरमें अहं, देओ न! शुद्ध जैसे सिद्ध हैं मुक्ति स्थानमें वह भी भिन्न-भिन्न अपनी सत्ता रहते हैं, जैसे मैं भी मेरी सत्ता मला स्वभाव पर अनंत आत्मासे, अरे..! अनंत सिद्धोंसे और अरिहंतोंसे, कर्मसे, विकल्पसे और मनसे मेरी सत्ता अंदर भिन्न (रहता हूं). अंतरमें ऐसा मानता है, अनुभवता है, जानता है. क्या कहा? .. उसमें पंडित किया था. ४३में. 'यो जानाति स पंडिता' दो शब्दोंमें .. ऐसा लिया. यहां दूसरा लिया. हेतु है.

'सर्वज्ञ सास्वतं ध्रुव' में ही सर्वज्ञ शाश्वत ध्रुव हूं. ... कठिन बात है. निवृत्ति लेकर थोडा अभ्यास करना चाहिए. बराबर है कि नहीं? संसारका अभ्यास करते हैं, तो ये थोडा करना चाहिए कि नहीं? हम तारणसमझमें है. लेकिन तारणस्वामी क्या कहते हैं भबर बिना तारणस्वामी कहांसे आया? सेठ! 'सो अहं देह मध्येषु' एतना भिन्न किया. परमानंद पहले पर्यायमें नहीं था, सिद्ध हुआ तब परमानंदका पूर्ण अनुभव हो गया. और परमानंदका अनुभव होने पर भी मुक्ति स्थानमें अपना अस्तित्व भिन्न रहकर रहते हैं. 'तिष्ठते'. अपना अस्तित्व भिन्न रहकर रहते हैं. किसीके अस्तित्वमें मिल जाते नहीं.

'सो अहं देह मध्येषु' में भी भिन्न हूं. ऐसा नहीं है कि सर्व अकाकार है. ऐसा बहुत लोग कहते हैं, ... गप मारते हैं और सुननेवालेको भबर नहीं. सब अहं ही है, लैया! ऐसा अहं व्यक्तिपना अपना भिन्न करनेसे अभिमान आ जाता है. छोड दो अहंपना, सब अहं है. मिथ्यादृष्टि है. समझमें आया? इसलिये तारणस्वामी कहते हैं कि 'सो अहं' में मेरा आत्मा परसे भिन्न अनंत गुणका पिंड में अकेला परसे भिन्न हूं. ये श्रावककी बात करते हैं, हां! श्रावकके आचारकी बात है. साधुकी बात तो अलग है. बहुत अलग है.

'सर्वज्ञ सास्वतं ध्रुव' क्या कहते हैं? सर्वको जाननेवाला अविनाशी. मैं तो सर्वको जाननेवाला मैं ही आत्मा हूं. सर्वज्ञ क्यों रखा? अहं ही आत्मा हो तो सर्वको जाननेवाला

नहीं रहता. अनंत आत्मा है, अनंत परमाणु है, छल द्रव्य है और अपना आत्मा पूर्णानंद आदि अनंत गुणका पिंड है. सबको ज्ञाननेवाला मैं हूं अंदरमें सर्वज्ञपद. समझमें आया? कितने ही कहते हैं, सर्वज्ञ तो परको ज्ञाने. परको ज्ञाने तो व्यभिचार हो जाये. परको नहीं ज्ञाने और आत्माको ज्ञाने तो छल द्रव्य है उसे तो ज्ञानते नहीं. ज्ञानते नहीं, ऐसा कौन कहता है? तीन काल, तीन लोकके अनंत द्रव्य, अनंत गुण, अनंती पर्यायि सर्वज्ञ अपनी एक समयकी पर्यायमें ज्ञानते हैं. अपनी पर्यायकी पूर्णताकी प्राप्तिको ज्ञाननेसे परको ज्ञान लेते हैं. समझमें आया? वह सिद्ध करते हैं कि मेरा आत्मा ही सर्वज्ञ है. ऐसा है तो पर्यायमें शक्तिमेंसे व्यक्तता होगी. व्यक्तता समझे? प्रगट.

मैं ही सर्वज्ञं, सर्वज्ञं. मेरा अंतर ज्ञानस्वभाव मेरे साथ अनंत सर्वको ज्ञाननेवाली शक्ति मेरी आत्मामें पडी है. और ऐसा मैं वर्तमान सर्वज्ञपदका अनुभव करनेवाला हूं. समझमें आया? आह...! एक-एक आत्मा सर्वज्ञ. ऐसे अनंत आत्मा सर्वज्ञ. समझमें आया? एक घड़ेके पानीमें हजार घड़ेका पानी समा जाता है? एक आत्मामें सर्व ज्ञान समा जाता है? ... एक घड़ेका पानी है, उसमें हजार घड़ेका पानी.. घडा समझते हो? आ जाता है? नहीं. तो एक सर्वज्ञमें क्या सर्वका ज्ञान आ जाता है? नहीं. ऐसा नहीं है. सुन तो सही. ज्ञान तो सर्वज्ञ आत्मामें एक समयमें तीन काल, तीन लोक, अनंत आत्मा, अनंत परमाणु भिन्न-भिन्न सत्ताका भान आत्मा सर्वज्ञमें कर सकता है. समझमें आया?

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- ये किसकी बात चलती है? ऐसा ही है, ऐसा है. पामरने अल्पज्ञ और राग और शरीरवाला मान रभा है. वह भ्रान्ति और भ्रम है. समझमें आया? लाज, कोड आदमी हो.. दृष्टांत देते हैं सर्वज्ञको उडानेवाला, सर्वज्ञ एक आत्मा? सर्व, सर्व, तीन काल तीन लोक, अनंत द्रव्य, अनंत गुण, अनंती पर्यायि, एक द्रव्यमें अनंत गुण हैं, एक-एक द्रव्यमें, सबको ज्ञाने? अनंती पर्यायि तीन कालकी ज्ञाने? एक घड़ेमें .. पानी नहीं रहता, ऐसे सर्वका ज्ञान नहीं होता. अरे..! सुन तो सही. ... समझमें आया है? घडा तो स्थूलकी बात करते हैं. ...

आत्मा ज्ञानानंद है. सुनो! ... ज्वालामें आया कि नहीं आत्मा ज्ञानानंद है? ठतना ज्वालामें आया है कि नहीं, ... का भी आत्मा ज्ञानानंद है, ऐसा ज्वालामें सब आत्मा है, ये तो ज्वालामें आता है कि नहीं? क्या कहा? आत्मा ज्ञानानंद है. कहते हैं, .. समा जाता है? सुन तो सही. ... सच्चिदानंद प्रभु, एक आत्मा मेरा पूर्ण आनंद .. ये क्या ज्वालामें नहीं आया? सब प्राणीको वर्तमानमें ऐसा ज्ञान ज्वालामें आया है. कोडो मनुष्योंको ज्वालामें आया कि आत्मा सर्वज्ञ है. ऐसा ज्ञानमें सबको ज्वाल आया है. ऐसा सबके ज्वालामें आया कि नहीं? समझमें आया? उसमें समानेकी बात कहाँ है? पानीका समाना

और घडेमें समानी बात (कहां) है. कुतर्क करते (हैं).

वह यहां कहते हैं, 'सर्वज्ञ सास्वत' शाश्वत नाम अविनाशी मेरा सर्वज्ञपद अंदरमें है. और अपने स्वभावको ... ध्रुव. दो शब्द अंदर पडे हैं न? शाश्वत और ध्रुव. मेरा सर्वज्ञ स्वभाव तीन काव, तीन लोक देजे. मैं अकेला ज्ञानका मेरा स्वभाव. भिन्न आत्माका भिन्न रहा. जैसा मैं अविनाशी सर्वज्ञा ज्ञाननेवाला ज्ञान मेरेमें है. दृष्टि परसे हट गयी, अल्पज्ञसे हट गयी, सर्वज्ञ सत् शाश्वत अविनाशी पद मेरा और ध्रुव उसमें स्थिर है. सर्वज्ञपद मेरेमें स्थिर है. आला..! जैसा सम्यग्दृष्टि श्रावक अनुभव करते हैं, उसको श्रावकका आचार कहनेमें आता है. समझमें आया?

ये षट्कर्म है, वह तो व्यवहार.. देव, गुरु और .. आता है न? षट् कर्म. वह राग है. आता है जड़, निश्चयसे श्रावकका परमार्थ आचार वह नहीं. व्यवहार है, पुण्यबंधका कारण है. षट् कर्म आते हैं कि नहीं? देवपूजा, गुरुसेवा, संयम, इन्द्रिय दमन, तप, दान. उसका विकल्प आता है. यहां तारणस्वामीने उसको यथार्थ आचारमें नहीं लिया है. उसको विकल्पात्मक व्यवहार आचार है सही. वह ज्ञाननेवायक है, अनुभवने वायक वह नहीं है. आता है, जबतक वीतराग नहीं हो तो श्रावकको भी विकल्परूप राग, लज्जा, इन्द्रिय दमन, इन्द्रिय निरोध आदि भाव होता है. स्वाध्याय करनेका भाव होता है. लेकिन है वह शुभराग, है शुभ विकल्प. पुण्यबंधका कारण है, मोक्षका कारण नहीं है. फिर भी आये बिना रहता नहीं. आने पर भी यथार्थ आचार तो उसको कहते हैं, अलो..! विकल्प भी मैं नहीं, अल्पज्ञपना है वर्तमान विकासरूप, उतना भी मैं नहीं, अल्पदर्शीपना उतना भी मैं नहीं, अल्प वीर्यपना पर्यायमें है, उतना नहीं. मैं तो सर्वज्ञ, उसके साथ सर्व वीर्य, उसके साथ पूर्ण आनंद, उसके साथ पूर्ण दृष्टि, जैसी शक्तिवान शाश्वत मेरा पद है. और वह ध्रुव नाम स्थिर है. स्थिर है. वैसा का वैसा. समझमें आया? उसको ज्ञानना, उसका अनुभव करना.

अपनी देहके मध्यमें है. देहो! 'देह मध्येषु' आया न? 'सो अहं देह मध्येषु'. वह व्यवहार कहा है. मैं तो मेरेमें हूं. लेकिन वह क्षेत्र क्या है, वह बतानेको 'देह मध्येषु' कहा है. देह मध्य नाम देह मध्यमें आकाश बताना है न, यहां मैं हूं, दूसरेमें नहीं. उसको ज्ञानते हैं, वह श्रावकका आचार कहनेमें आता है. व्यवहार .. अंकांत लगती है. समझमें आया? अकेला व्यवहारका पक्ष करे, ये व्यवहारका आचार, ये व्यवहारका आचार. उसको वह बात अंकांत लगती है. अंकांत नहीं है. .. बात हो, सविकल्पका व्यवहार हो तो व्यवहार ज्ञाननेवायक उत्पन्न होता है. जैसी बात बिना अकेला व्यवहार अंकांत व्यवहार मिथ्यादृष्टिका है. समझमें आया? मिथ्यादृष्टिका व्यवहार.

सम्यग्दृष्टिका व्यवहार, वह विकल्प हो, लेकिन वह बंधका कारण ज्ञानी ज्ञानते हैं, धर्म नहीं. धर्मका कारण वह विकल्प नहीं है. जलचंद्रंज! क्या करना? लोग (कहते हैं), व्यवहारका

निषेध करते हैं, व्यवहारका लोप हो जायेगा, व्यवहार लोप हो जायेगा. सोनगढकी पद्धति स्वीकारते हैं तो व्यवहारका लोप हो जायेगा. कहते हैं कि नहीं? ये स्वीकार करनेसे व्यवहारका लोप हो जायेगा. तारुणस्वामी कहते हैं कि हम तो ऐसा श्रावकाचार कहते हैं. विकल्पको हम श्रावकाचार परमार्थ नहीं कहते. सुन तो सही. शुभ व्यवहार होनेपर भी व्यवहार आचरण है. वह वास्तवमें परमार्थ आचरण, स्वभावका आचरण नहीं.

स्वभावका निर्विकल्प आचरण अपना स्वभाव शुद्ध ज्ञायक सर्वज्ञ शाश्वत स्थिर ध्रुव है, ऐसा अनुभव करना, प्रतीत करना, स्थिर करना, पर्यायमें .. उसका नाम श्रावकाचार पर्यायमें प्रगट हुआ है. श्रावकाचार पर्याय है. श्रावकाचार कोई द्रव्य-गुण नहीं है. समझमें आया? क्या है? श्रावकाचार पर्याय है. कैसी पर्यायको श्रावकाचार कहते हैं? ऐसा मैं शाश्वत सर्वज्ञ ध्रुव .. हूं, ऐसा दृष्टि, ज्ञान और अकाग्रता लुपी, उसको श्रावकाचार कहते हैं. डालयंदण्ड! .. नहीं नहीं है. समझमें आया? ४५.

दर्शन ज्ञान संयुक्तं, चरणं वीर्यं अनंतं।

अमूर्त ज्ञान संसुद्धं, देहे देवलि तिष्ठते॥४५॥

देओ! अनंत दर्शन, अनंत ज्ञान सहित, अनंत वीर्य और अनंत वीतराग चारित्र सहित. 'चरणं' है न? 'चरणं वीर्यं अनंतं'. अनंतका अर्थ है वीतराग चारित्र अंदर आत्मामें पडा है. समझमें आया? मेरे आत्मामें बेलद अपरिमित, अनंत दर्शन-दृष्टापना पडा है. और अनंत बेलद अचिंत्य अपरिमित ज्ञानस्वभाव मेरेमें पडा है. पर्याय ऐसा कबुल करती है. पर्यायको यहां श्रावकपना कहा है. पर्याय कबुल करती है त्रिकावको. मैं अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, चरण अनंत. दोनोंको अनंत कहा है न? चरण, वीर्यको अनंत कहा है न? उसका अर्थ कि वीर्य अनंत (है). मेरेमें बल-सामर्थ्य अपने शुद्ध स्वभावकी रचना करनेवाला मेरेमें अनंत वीर्य है. शुद्ध स्वभाव. पुण्य-पाप विकल्पकी रचना करनेवाला नहीं. समझमें आया? मेरा वीर्य कोई शरीरकी क्रिया रचे, हिलावे, करे ऐसा है ही नहीं अपने वीर्यमें. समझमें आया? अपना वीर्य अनंत, अपने अनंत शुद्ध गुणकी रचना पर्यायमें करे ऐसा अनंत वीर्य मेरेमें पडा है. - बल.

और अनंत चरणं. चारित्र अंदरमें वीतराग पर्याय. वीतरागी शक्तिका स्वरूप अस्तित्वमें. मेरे अंतरमें वीतरागी चारित्र (पडा है). स्वरूप चरणं पूर्णानंदका आचरण, ऐसी पर्यायमें, द्रव्यमें, शक्तिमें-गुणमें पूर्ण चारित्र पडा है. अनंत चारित्र पडा है. ऐसा अमूर्त. मैं अमूर्त हूं. 'ज्ञान संसुद्धं'. और ज्ञानाकार परम शुद्ध देह. देओ! 'अमूर्त ज्ञान संसुद्धं'. ज्ञान निर्मणानंद.

'देहे देवलि तिष्ठते' इस देहइपी देवके मंदिरमें, इस देहइपी मंदिरमें मैं तिष्ठता हूं. समझमें आया? देह इपी मंदिरमें बिराजमान है. ऐसा अनुभव करते हैं. श्रद्धा करके ज्ञान

करते हैं. अंतरमें पूर्ण आनंद, ज्ञान, .. आदि अनंत पडा है, वह तो द्रव्य स्वभाव है, गुण स्वभाव है. उसकी पर्यायमें आचरण अंदर .. करते हैं, उस आचरणको श्रावकाचार मोक्षका मार्गकी पर्याय उसको कलनेमें आती है. पहले तो अभी समझनेका ठिकाना नहीं. उसे अंदरमें खीज क्या है... गडबड-गडबड (करते हैं). सबके साथ समन्वय करो. समन्वय समझते हो? मिलान. सब अके.. हमारा भी है, ईश्वर है, हमारा परमेश्वर भी ऐसा कहते हैं, तुम भी ऐसा कहते हो. बातमें झक नहीं है. .. है. सर्वज्ञके सिवाय.. समझमें आया? परके साथ थोडा भी मिलान करना,.. पंडितजी!

तारणस्वामी कहते हैं, मालूम है? जनरंजन. जनरंजनके लिये ... स्त्री-पुत्र भुश होंगे. आलाला..! बडी बात, भाई! मूढ है. निगोदमें जायेगा. किसकी प्रभावना? अधर्मकी? प्रभावना अपनी पर्यायमें होती है कि बाहर होती है? प्र-भावना. प्र-विशेष भावना. अपने शुद्ध ध्रुव स्वभावकी अकाग्रता वह प्रभावना है. समझमें आया? दूसरेको रंजन करनेको... सबको ऐसा लगे, साधारण समाज... ओलोलो..! क्या बात करते हैं! जनरंजन, जिनरंजन नहीं. जिनउक्तं नहीं, जनउक्तं. ऐसा शब्द भी अंदर आता है. जिनयुक्त नहीं, जनयुक्त. आता है न? भजनमें आता है. ... आता है कि नहीं? ममल पालुडमें आता है. सब देख लिया, अके महिनेमें पूरा ... देख लिया. ... मिलान नहीं होता, बहुत विरुद्ध है. ... तारणस्वामीके नामका बनाया है. उसके साथ मिलान नहीं होता. ... समझमें आया? अभी अके महिनेमें सब बारह देख लिये. ... बनाया. ... थोडा-थोडा बारहमेंसे ले लिया है. कोई सार-सार गाथा हो न. समझमें आया? क्या कहते हैं? देओ!

जनगण भावला. अरे..! जनसमूह तो मूर्ख है. भावला है. आता है कि नहीं भजन? ... समझमें आया? ज्ञान तो ज्ञान मेरा है. ओलो..! रागकी क्रियासे मेरा संबंध नहीं. देहकी क्रियासे तो संबंध ही क्या है? दो आत्मा अके, उसका तीन कालमें मिलान है नहीं. ऐसा ज्ञानी अंतर ज्ञानस्वभाव.. कला न? 'ज्ञान संसुद्ध'. है? मेरा ज्ञानाकार परम शुद्ध स्वभाव. वीतराग मेरा त्रिकाल स्वभाव. अभी पर्यायमें भले वीतराग न हो, पर्यायमें वीतराग हो तो केवलज्ञान हो जाये. समझमें आया? लेकिन द्रव्य-गुणमें वीतराग चारित्र भरा है. समस्वभावी चारित्र, समस्वभावी चारित्र. यथाभ्यात शुद्ध चारित्र अंदर. साक्षात् अंदर पडा है. ध्रुव स्थिर. ऐसा आत्मा में देहूपी देवणमें बिराजमान हूं. कलो, समझमें आया? वह तो व्यवहार भगवान है. भगवान वहां नहीं, भगवान यहां है. समझमें आया? 'देहे देवलि तिष्ठते'. ४८. कोई-कोई गाथा भिन्न-भिन्न लिखी है. ... ४८.

विज्ञानं जो विजानते, अप्पा पर परिच्छया।

परिच्छये अप्प सद्भाव, अंतर आत्मा परिच्छये॥४९॥

देओ! ये शब्द. जो कोई आत्मा और पर. है न? देओ! 'अप्पा पर' दो शब्द पडे

हैं, दूसरे पदमें. 'अप्पा पर'. दो सिद्ध किया. अक ही आत्मा है और अकेला पर ही है, ऐसा नहीं. दो है, अनादि दोनों है. 'अप्पा' अपना आत्मा. और 'पर' अनंत आत्मा. 'पर' अनंत परमाणु, 'पर' अनंत निगोदके श्रव, छल द्रव्य. मेरेसे छल द्रव्य अन्य-पर-भिन्न हैं.

'अप्पा पर परिच्छया' आत्मा और परकी परीक्षा करके. देओ! परीक्षा करके. जैसे ही मूढपने ज्ञान ले, माने ऐसा नहीं. कसोटी (पत्थर पर) सुवर्णकी परीक्षा करता है कि नहीं? सोलह वाल है, पंद्रह वाल है, ऐसा कलते हैं कि नहीं? हमारेमें सोलह वला कलते हैं. पूर्ण होता है न? सौ टयका सोना. पंद्रह वाल है, भैया! अक अंश उसमें .. का मिला हुआ है. अकेला सोलह वाल. जैसे अपना आत्मा और परकी परीक्षा करनी चालिये. परीक्षा किये बिना मानना वह मूढ दृष्टि है. है? पंडितशु! परीक्षा करना. भगवान ज्ञाने कौन... भगवानने परीक्षा की.

मुमुक्षु :- भगवान कहे वह सत्य.

उत्तर :- लेकिन सत्य तुझे नक्की हुआ बिना, परीक्षा किये बिना भगवान कहे वह सत्य, कहां-से आया? परीक्षा कर. समझमें आया? मेरा आत्मा प्रत्यक्ष मेरे शरीर प्रमाण भिन्न है. देहमें तिष्ठते आया है. शरीर प्रमाण मेरा आकार है. देह मध्ये कला है न सबमें? शरीर प्रमाण मेरा आकार है. मेरा आकार कोई सर्वव्यापक (नहीं है). सर्वमें चला गया नहीं. क्यों? कि जब मैं अंदरमें अकाग्र होता हूं तो धतने क्षेत्रमें अकाग्र होता हूं. अकाग्र होनेमें बाहर ज्ञाना पडता है ऐसा नहीं. समझमें आया? पंडितशु! देह मध्ये कला है न? तो मेरा आकार उतना नहीं है, आकार असंप्य प्रदेशका. धतनेमें अकाग्र होता हूं तो मेरा पत्ता लगता है. जैसे (बाहरमें) अकाग्र होउं तो पत्ता लगता है ऐसा नहीं. क्योंकि मैं बाहरमें नहीं हूं. समझमें आया? मैं धतनेमें हूं. देह मध्यमें बिलकूल असंप्य प्रदेश आकार (है). भवे असंप्य प्रदेश मालूम नहीं हो, लेकिन धतने आकारमें अपने अवगाहनमें मेरा अनंत गुणका पिंड धतनेमें है. दूसरेके साथ मिलाउं और दूसरेमें व्यापक हो और दृष्टि जैसे करे तो .. सब मिल जाओ, भैया! प्रकाशमें प्रकाश है. ... स्थानकवासी है न? गये थे. जैनकी श्रद्धा नहीं थी. बस, अनंतमें मिल गया. आत्मा प्रकाश हुआ, वह प्रकाश दूसरा अनंत प्रकाश है तो मिल गया अंदरमें. ऐसा नहीं है. बूढमूढकी कल्पना अज्ञानीकी है. समझमें आया?

अपना देह. अपनी पर्याय अपनेमें अकाग्र धतने क्षेत्रमें ही होती है. उसी क्षेत्रमें अनंत गुण पडे हैं. कोई गुण बाहरमें है नहीं. क्षेत्रका नक्की होना, द्रव्यका नक्की होना, गुणका नक्की होना, प्रगट पर्यायका होना. ... परीक्षा करके करना चालिये. भगवन्माई! समझमें आया? 'विज्ञानं जो विजानते'. जो कोई दोनोंके विशेष ज्ञानको भेदविज्ञानको विशेष सूक्ष्मतासे

जानते है,.. देजो! शब्द पडा है न? 'विज्ञानं जो विजानते'. 'अप्पा पर' अपना ज्ञान अतीन्द्रिय सूक्ष्म. जैसा द्रव्य है, जैसा गुण है, जैसी पर्याय है. और विकार भी कैसे उत्पन्न हो और भिन्नता अंदरमें कैसी है, ऐसी 'अप्पा' - अपनी परीक्षा करना, परकी परीक्षा करना. विकल्पकी, कर्मकी, शरीरकी, दूसरे सिद्धोंकी, सिद्ध क्या है, अरिहंत क्या है, परमेश्वरी क्या है, दूसरा निगोदका आत्मा कैसा, कहां है अनंत और परमाणु, अनंत पुद्गलोमें परमाणु क्या, उसका गुण क्या, उसकी पर्याय स्वतंत्र क्या, 'अप्पा पर'की परीक्षा करके, दोनोके विशेष ज्ञानको. विज्ञान है न? विज्ञान. यानी विशेष ज्ञानकर. भेदविज्ञानको 'अप्पा पर'की परीक्षा करके भेदविज्ञानको. ऐसा शब्द पडा है. भेदविज्ञान अकमें नहीं होता. भेदविज्ञान कलता है, अनंत परपदार्थमें मेरा अकेला मेरा भिन्न आत्मा (है). समजमें आया?

शास्त्रमें आता है न? 'उदयति न नयश्रीरस्तमेति प्रमाणं'. अनुभव होनेमें नय नहीं होते. निक्षेपका नहीं होता है, और प्रमाण नहीं होता. अस, वेदांत कहे, हमारा अद्वैत आ गया. कहां आया? सुन तो सली. समयसारकी १३वीं गाथा है, उसमें आता है. 'उदयति न नयश्रीरस्तमेति प्रमाणं'. देजो! नय भी विलय हो जाता है, निक्षेप भी विलय हो जाता है, प्रमाण भी विलय हो जाता है. समयसारमें श्लोक है. फिर क्या रहा? अकेला अद्वैत रहा. लेकिन अद्वैत कौन? मेरा आत्मा अद्वैत. समजमें आया? नय, निक्षेपका विकल्पसे ज्ञान किया था, ... अंतर दृष्टि करनेसे विकल्प (चले गये). वस्तु दूसरी चली जाती है और परसे मैं भिन्न हूं, उसमें भिन्न जाता है, परके साथ, ऐसा कभी होता नहीं. समजमें आया?

'अप्पा पर परिच्छया' 'विज्ञानं जो विजानते'. 'विजानते'. शब्द तो ये है, 'विज्ञानं जो विजानते'. विशेषपने सूक्ष्म बुद्धिसे जानता है. सूक्ष्म बुद्धिसे, सूक्ष्म तर्कसे, सूक्ष्म न्यायसे. ये कभी पढा है?

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- .. पैसेकी धूलकी? दवाल है. ये मूडी क्या है? ... 'अप्पा पर' हो आया कि नहीं? ये श्रावकको कलते हैं कि कोठ मुनिको कलते हैं? श्रावकाचार. 'अप्पा पर परिच्छया' अपनी और परकी परीक्षा करके विशेष जानकर, सूक्ष्म विशेष जानना, सूक्ष्मतासे जानना. 'विजानते' शब्द पडा है न? सूक्ष्मपने जानना. स्थूलपने नहीं. सूक्ष्मपने सूक्ष्म बुद्धि. वीतराग मार्ग सूक्ष्म बुद्धिका है. श्रीमद् कलते हैं न? सूक्ष्म बुद्धिसे वीतरागका धर्म प्राप्त होता है. सूक्ष्म बोधका अभिलाषी. ऐसा आता है न? सदैव सूक्ष्म बोधका अभिलाषी. वीतराग मार्गको प्राप्त करनेका पात्र है. सदैव सूक्ष्म बोधका अभिलाषी. आलाला..! श्रीमद् कलते हैं. भगवान त्रिलोकनाथ सर्वज्ञ परमात्मा वीर जिनेश्वरके मार्गका पात्र जव कैसा होता है? सदैव सूक्ष्म बोधका अभिलाषी.

अलो..! चैतन्य अतीन्द्रिय कैसा है? राग कैसा है? पर कैसा है? सबको परीक्षा करके.. समझमें आया? विशेष सूक्ष्मतासे तथा 'अप्प सद्भाव' आत्माकी सत्ता और उसके स्वभावका. देओ! शब्द लेते हैं. 'परिच्छये' शब्द पडा है. तीन शब्द पडे हैं उसमें. परिच्छया दो शब्द और परिच्छये तीसरा शब्द. कहते हैं, अपना आत्मा शुद्ध परमानंदकी मूर्ति कैसी है, ये सूक्ष्म बोधसे समझना और परका विकल्प, राग, देह, वाणी सबका अस्तित्व है. उसको सूक्ष्म बोधसे समझना. समझकर भेदकर 'परिच्छये अप्प सद्भाव'. फिर परका परिचय नहीं करना है, ज्ञाननेमें है. समझमें आया? परिचय अपना करना है. 'परिच्छये अप्प सद्भाव' आत्माका सत्ताइप शुद्ध स्वभाव अनंत गुणका पुंज प्रभु अेक, उसका परिचय करना. उसका परिचय कलो, संग कलो, अनुभव कलो, अेकाग्रता कलो, शांतरसेके वेदनमें अेकाकार लो ज्ञाना कलो. ये आत्माका सद्भावका परिचय है. संग किया, संग. अनादिसे असंग पदार्थका संग छोडकर, पुण्य-पापके संगमें, निमित्तके संगमें .. था. समझमें आया?

आत्माके सत्ता और सुभस्वभावका परिचय चालता है. देओ! परिचय. ... आत्माका परिचय. पंडितज्ज! तारुणस्वामीने कैसा शब्द (रभा है). अेक गाथामें तीन बोल रभे हैं. पहला 'अप्पा पर परिच्छया', (दूसरा) 'परिच्छये अप्प सद्भाव'. समझमें आया? तब 'अंतर आत्मा परिच्छये'. वही अंतरात्मा है. जैसा परिचय नाम पहचानना चालिये. अंतरात्माकी पहचान है. अंतरात्मा कलो, श्रावकाचार कलो, समकित कलो, निश्चय सम्यग्ज्ञान कलो. समझमें आया? 'परिच्छये अप्प सद्भाव'. अपना और परका सूक्ष्म बोधका भेद लोनेसे, परसे लटकर.. ज्ञान किया, लेकिन परसे लटकर अपना पूर्ण ज्ञायकभाव, उसका परिचय पाता है अथवा उसका पत्ता पाता है कि क्या चीज है. अंतरमें अेकाग्र होता है कि ये आत्मा शुद्ध है. पूर्ण आनंदघन है. जैसा ज्ञानी अंतरात्मा यौथे गुणस्थानवाला या पंचम गुणस्थानवाला परिचय पाता है. वही अंतरात्मा है. देओ! अंतरात्मा. यहां तो अभी यौथे, पांचवे गुणस्थानकी बात करते हैं श्रावकाचारमें.

पुण्य-पाप, शुभाशुभ भावकी अेकाग्रता परिचय पाता है, वल मिथ्यादृष्टि बहिरात्मा है. बहिरात्मा है. जे अंदरमें नहीं है उसका परिचय पाया. अंदरमें तो अनंत ज्ञान, दर्शन, आनंद है. विकल्प उठते हैं, दया, दानका विकल्प शुभभाव, उसका परिचय पाकर अेकाग्र है, वल बहिरात्मा मिथ्यादृष्टि मूढ है. समझमें आया? और अंतर स्वभावका परिचय पाता है वल अंतरात्मा 'परिच्छये'. कहते हैं कि परीक्षा करके ज्ञानना कि जैसा अंतरात्मा होता है. जैसे अंतरात्माकी परीक्षा करना. देओ! परीक्षा करना, परीक्षा करना जैसा लेते हैं. समझे बिना ज्ञाननेमें आता नहीं. भगवान कहते हैं, ... लोगा. तारुणस्वामी कहते हैं, क्या कहते हैं ये तो तुजे मावूम नहीं, कहांसे आया तेरे पास..? समझमें आया?

कहते हैं कि, परिचय तेरा स्वभाव और परका भेद करके, तेरेमें संग करना भगवानका.

परका संग छोड देना. विकल्पका भी संग छोड देना. स्वका परिचय करना. जैसा अनुभव होना, उसका नाम श्रावकआचार कलनेमें आता है. आलाला..! बडी बात, भाई! समजमें आया? ४८ गाथा हुई. अब ६०. ...

अदेवं देव उक्तं च, अंध अंधेन दृष्टते।

मार्ग किं प्रवेशं च, अंध कूपं पतति ये॥६०॥

परीक्षा नहीं, भान नहीं, स्व-परकी जबर नहीं. समज? 'अदेवं देव उक्तं' अदेवको देव मानते हैं. सर्वज्ञपदके देव क्या है? अनंत आनंदपद क्या है? पूर्णानंद वीर्य क्या है? मालूम नहीं. और साधारणजन कोई ब्रह्मा, विष्णु, इलाना, ढिकना बात करनेवाला निकले कि ये अेक देव है. समजमें आया? 'अदेवं देव उक्तं च' ... जैसा माने. समज? ...

'अंध अंधेन दृष्टते'. अंधेको अंधे द्वारा मार्ग दिभाया जावे. सर्वज्ञ भगवानने आत्मा, परमात्मा, पर, स्व, अनंत द्रव्य, गुण, पर्यायि क्या, मालूम नहीं. अंधा कथन करता है, अंधा कथन करे और अंधा उसको माने. कडक भाषा है. कुरुणाकी भाषा है. क्या? कुरुणा (है). प्रभु! तुमको दिभानेवाला अंधा और तू सुननेवाला अंधा, कहां जायेगा तू? जडेमें जायेगा. कूपमें जायेगा, जैसा यहां कहते हैं. तुजे मालूम नहीं,.. देओ! 'अंध अंधेन दृष्टते। मार्ग किं प्रवेशं च'. मार्ग दिभावा जावे, किस तरह मार्गमें प्रवेश हो सकेगा? अंधा मार्ग बतावे कि जैसे जाना, जैसे जाना. जैसे माने क्या? जैसे जाओ, जैसे जाओ. लेकिन कहां? अंधेको सब जैसा-जैसा है. जैसे दिभानेवाला अंधा. जैसा करो, जैसा करो. प्राणायाम करो, जैसा करो. कहनेवाला अंधा. अरे..! वह तो रागकी क्रिया है. जैसा करो, प्राणायाम करना, फिर जैसा करना, फिर आसन लगा देना. वह तो जडकी पर्यायि है, क्या लगाये? समजमें आया? और जैसी दया पावो, जैसी भक्ति करो, जैसे उपवास करो, जैसा ये करो, ये करते-करते तुम्हारा कल्याण हो जायेगा. ... 'अदेवं देव उक्तं' देवकी वाणी और देवको मानते नहीं, समजते नहीं. 'अंध अंधेन दृष्टते। अंध कूपं पतति ये'. अंधे कूपमें. देओ! अकेला कूप नहीं लिया है. अंधे कूपमें. कूर्में अंधेरा है न. .. कूंआ भी अंधा लिया है. .. यौरासीमें गिरेगा, अंधा है, तेरा पत्ता नहीं जायेगा.

सर्वज्ञ भगवान परमेश्वर त्रिलोकनाथ, जिसने छह द्रव्य, पंचास्तिकाय, नौ तत्त्व आदि, पर आदि और स्व तेरा पूर्ण स्वरूप, उसकी परीक्षा करके अंतर दृष्टि, अनुभव नहीं किया और अज्ञानीने कदा जैसे मार्ग पर चला. दोनों अंधे कूपमें 'पतति'. अंधे कूपमें गिरता है. श्रावकाचारसे विद्भकी बात की. पहले श्रावकाचार कदा, ये श्रावकाचारसे विद्भ बात है. जिसको सख्या श्रावकाचार नहीं है, वह विपरीत मार्ग पर चलकर अंधे कूपमें गिरेगा.

...

(श्रोता :- प्रमाण वचन गुरुदेव!)

